ऐतिहासिक राजस्थानी लोकगीतों में स्वाभिमानी स्त्री–पात्र

डॉ. यज्ञेश नारायण पुरोहित

व्याख्याता हिन्दी
श्री नेहरू शारदापीठ (पी.जी.) महाविद्यालय
बीकानेर (राजस्थान)

लोकगीत लोक–संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। लोक का अर्थ उस जन–साधारण से है जिसने सभ्यता और संस्कृति का बनावटी पर्दा नहीं डाल रखा है। लोकगीत तो सहज–सरल लोगों के मन से निकले हुए ऐसे स्वर, शब्द और ताल हैं जिनका त्रिवेणी संगम लोकजीवन में हर्ष और आनंद उत्पन्न करता है। लोक–साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. मदनलाल शर्मा कहते हैं, ''जब रससिक्त उद्‌गार स्वतः स्फुरणा से उद्‌भूत होते हैं, तभी लोकगीतों का जन्म होता है।'' [1] ''लोक का सामान्य अर्थ संसार से है और इसी अर्थ में पौराणिक ग्रंथों में कई लोकों का वर्णन है, लेकिन साहित्य और कला के प्रसंग में लोक का अर्थ उस पर्याय में है जिससे 'आलोक' शब्द बना है। इस तरह लोकगीतों में लोक (समाज) की सामूहिक चेतना की रागात्मक अभिव्यक्ति है।'' [2]

राजस्थान में लोकगीतों की प्राचीन परम्परा रही है। किसी रचयिता की काव्य–रचना का समय और काल तो हम बता सकते हैं लेकिन लोकगीत की रचना और उसके रचयिता का कोई अता–पता नहीं है। हां, ऐतिहासिक लोकगीतों के पात्रों का समय देखकर यह अनुमान अवश्य लगा सकते हैं कि इसकी रचना संभवतः उनके समकालीन समय में हुई हैं। राजस्थानी लोक–साहित्य के मनीषी और महोपाध्याय नानूराम संस्कर्ता लिखते हैं, ''प्राचीन भारतीय ग्रंथों में अनेक स्थानों पर गीतों के गाए जाने के उल्लेख मिलते हैं, किंतु इनकी उत्पत्ति का समय और स्थान उपलब्ध नहीं होता।'' [3] एक तरह से देखा जाए तो लोकगीतों की प्राचीनता औ ऐतिहासिकता तो मानव जीवन की प्राचीनता जितनी ही है।

राजस्थान में एक कहावत प्रचलित है–'गीतड़ा कै भींतड़ा'। इस कहावत का तात्पर्य यह है कि मनुष्य की यश–कीर्ति को युगों तक कायम रखने के लिए इन दो चीजों की प्रमुख भूमिका होती है। एक तो व्यक्ति विशेष की स्मृति में बनाई हुई इमारतें उन्हें लोकस्मृति में जीवित रखते हैं और दूसरा उनके यशोगान में रचा हुआ काव्य उनकी कीर्ति–कथा को सदियों तक जीवित रखता है। इन दोनों में ही 'भीतड़ों' (भवन की दीवारें) की बजाय 'गीतड़ों' (लोकगीतों) का अधिक महत्त्व है, क्योंकि भवन तो एक समय आने पर खंडहर होकर इतिहास के पन्नों में सिमट जाता है, लेकिन ऐतिहासिक लोकगीत तो युगों–युगों तक नष्ट नहीं हो पाते। राजस्थानी लोकगीतों के शोध अध्येता डॉ. किरणचन्द नाहटा लिखते हैं, ''इसका कारण यह है कि मध्यकालीन राजस्थानी समाज की इतिहास–चेतना जागृत और सराहनीय रही है। उस काल में यहां इतिहास विषयक हजारों ग्रंथ तैयार हुए। अपने समय के इतिहास को लिपिबद्ध करने के साथ ही उन्हें संरक्षित करने और सुरक्षित रखने के भी अनेक उपक्रम किए गए। इतना ही नहीं, श्रुति परंपरा के रूप में भी इतिहास से जुड़े हुए अनेक प्रसंगों को इस समाज ने सैकड़ों वर्षों तक लोक–स्मृति में जीवित रखा।'' [4]

ऊपर के विवेचक में इतिहास की जिस श्रुत–परम्परा का उल्लेख हुआ है, यहां उन पर संक्षिप्त चर्चा प्रासंगिक है। श्रुत परंपरा में उपलब्ध यह साहित्य कई रूपों में मिलता है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण रूप है–लोकगीत। इन लोकगीतों के माध्यम से राजस्थानी ने अपने उन महानायकों को लोकदेवता का दर्जा देकर सदियों तक उनका यशोगान करते रहे, जिन्होंने लोक–कल्याण के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। ऐसे लोकनायकों में गोगाजी चौहान, पाबूजी राठौड़, रामदेवजी तंवर और वीर तेजाजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विशिष्ट गायक जातियों ने अपने–अपने लोकवाद्यों के साथ इन वीरों के यशस्वी चरित्र का बखान करके उन्हें तरन्नुम में गाया जो आगे चलकर लोकगीत के रूप में प्रचलित हो गए। इनके अलावा एक ऐसा वर्ग भी रहा जिन्होंने पीढ़ी–दर–पीढ़ी तक ऐतिहासिक प्रसंगों को विविध लोकगीतों के माध्यम से सुरक्षित रखा। यह वर्ग यहाँ का स्त्री–वर्ग था। राजस्थानी समाज की असंख्य स्त्रियों ने विरासत में प्राप्त इन लोकगीतों को सदियों तक सुरक्षित रखा है।

इस शोध आलेख में ऐतिहासिक स्त्री–पात्रों से संबंधित कुछ ऐसे राजस्थानी लोकगीतों का लेखा–जोखा लिया गया है जो या तो लोककथाओं के रूप में आज भी यत्र–तत्र गायन के माध्यम से सुनाई देते हैं अथवा वे लोकगीत आज भी राजस्थानी स्त्रियां रातिजोगे और पर्व–त्योहार के अवसर पर गाती हैं। इन सभी गीतों की विशेषता यह है कि ये सभी लोकगीत राजस्थान के मध्यकालीन इतिहास के पात्रों से संबंधित है। इनमें भी ऐतिहासिक नारी पात्रों की संख्या अधिक है। जैसे 'ओड' जाति की जसमांदे' का यह लोकगीतगीत नारी के शील–सौंदर्य का वर्णन करता है–

हे जसमादे राणी ! महाराजा बुलावै, म्हांरा माणक–मोती निरखण आय
माणक–मोती महाराज ! थांरै कानां–नैं सोवै,
म्हांनैं खोटा मिणियां–रो चाव म्हांरा लाल !
महाराजा बुलावै म्हांरा ओडां ! कांई थांरी ओडणी–रो मोल
अस्सी ऊंठ बहत्तर घोड़ा, अेक चिटूली–रो मोल म्हांरा लाल !
छाळी छींकै गधो मूंडै, ओड ऊचळिया जाय म्हांरा लाल! [5]

इस लोकगीत की पृष्ठभूमि में कथा यह है कि एक बार ओड जाति का एक कबीला कामकाज के उद्देश्य से गुजरात से राजस्थान पहुंचा। इस कबीले की स्त्री जसमां ओडणी अत्यंत रूपवती थी, जिससे यहाँ का एक राजा राव खंगार उस पर मोहित हो गया और उसे रंगमहल में ले जाने के लिए उतावला–बावला हो उठा, लेकिन जसमा ने लोकगीत की उपर्युक्त पंक्तियों की बातें

कहते हुए अपने शील–सौंदर्य को बचाए रखा। राव खंगार ने जब मनमानी करनी चाही तो इसकी भनक लगते ही जसमां ओडण सहित पूरा कबीला रात्रि के समय वहाँ से पलायन कर गया और राव खंगार हाथ मलता रह गया।

इसी प्रकार राजस्थान में 'रातीजोगे' (रात्रि जागरण) में गाया जाने वाला एक अन्य लोकगीत 'उमादे भटियानी' का है, जो अपने नारी–स्वाभिमान और आत्मगौरव को बनाए रखती है। यह रानी राजस्थान में 'रूठी रानी' के रूप में प्रसिद्ध रही है, जो जोधपुर के राजा की पटरानी थी। ऊमादे रानी का राजा उसकी दासी भारमली के रूप पर मोहित होकर उसे अपने रंगमहल में बुलवा लेता है। जब ऊमा दे वहां जाकर यह दृश्य देखती है तो वह जीवनपर्यंत राजा से संबंध नहीं रखने की प्रतिज्ञा ले लेती है और उसे अन्त तक निभाती भी है। राजा अपने कुकृत्य पर पश्चात्ताप करते हुए लाख मान–मनोव्वल करता है लेकिन रानी नहीं मानती। गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं–

थे तो घर जावो आपकै ए उमादे राणी,
(कोई) म्हारै भारमली जी सेज, वारी ए उमादे राणी।
टग टग महलां सूं ऊतरी ए उमादे राणी,
कोई जड़िया छै सजड़ किंवाड़, वारी ए उमादे राणी।
मनावण जी पधारियां जी नौ कूंटी का राव,
भटियाणी राणी खोल किंवाड़, वारी ए उमादे राणी।
थांरै तो महलां रम रही जी भारमली जी राज,
म्हारो नाय मनावो जी होय, वारी ए उमादे राणी। [6]

एक ऐसा ही ऐतिहासिक लोकगीत 'जैतल' है जिसमें वह भी सौतिया दाह का शिकार होती है। राजस्थानी समाज में रतजगे में यह गीत अनिवार्य रूप से गाया जाता है। जैतल देवी अपनी पारिवारिक शादी में रात्रिजगे में गीत गाने जाती है और दासी को यह समझाइश देकर जाती है कि मेरे जाने के बाद रंगमहल का दीपक मत जलाना और न ही मेरे पति का भेजा हुआ बीड़ा (पान) स्वीकार करना। लेकिन राजा पेट दुखने का बहाना बनाकर दासी को अपने शयन–कक्ष में बुला लेता है। इस पर रतजगे से लौटने और अनहोनी घटना का पता चलने पर जैतल अपने पिता को पत्र भेजकर राजा को सबक सिखाने के लिए बुलावा भेजती है। लोकगीत की ये पंक्तियां इस करुण–कथा को दर्शाती है–

सुण–सुण ए दासी कहां थानैं बात, दिवलो मत जोई सूनै महल को जी
सुण–सुण ए दासी देवां थानैं सीख, पगल्या मत चांपी मोटै राव का जी
सुण–सुण ए दासी देवां थानैं सीख, गहणां मत पहरी रतन–जड़ाव का जी
सुण–सुण ए दासी देवां थानैं सीख, बिड़लो मत झेली पान पचास को जी
थारै ए जिठाणी या के जी रीत, कांकण–डोरो बांध्यां आई रातीजुगै जी
जेठ बडोड़ै कै सात बरस की धीय, काकी थारै सूनै महल दीवो जगै जी
के कोई रावजी को दूखै लाग्यो पेट, के कोई आया प्यारा पावणा जी
ना कोई रावजी को दूखै लाग्यो पेट, ना कोई आया प्यारा पावणा जी
ताळा तो कूंची बाई जैतलदे रै हाथ, घर–वर रूंध्यो दासी मणहठी जी। [7]

इसी प्रकार 'सजनां' लोकगीत नारी के अतुलनीय आत्मबल, दृढ़ संकल्प–शक्ति की गौरव–गाथा गाने के साथ ही पुरुष वर्ग के दंभ की श्रेष्ठता को ललकारने वाला गीत है। राजस्थानी लोक साहित्य में सजनां विषयक पर्याप्त सामग्री मिलती है। इसमें वात, लोककथा, लोकगीत भी शामिल हैं। मुगल शासन के समय उनकी चाकरी में राजस्थान के ठिकानेदार सेना में युद्ध करने जाते थे। सजनां के पिता को भी हाड़ा राव का फरमान मिला लेकिन वह बूढ़ा हो गया था। सेना में शामिल होने का फरमान देखकर वह चिंतित हो उठा। अपने वृद्ध पिता की चिंता को भांपते हुए सजनां स्वयं मर्दाने भेश में घोड़े पर सवार होकर हाड़ा राव के दरबार में पहुंचती है और अपने वीरत्व का परिचय देती है। सजनां विषयक इस लोकगीत का प्रारम्भ इस प्रकार होता है–

बैठ्या बाबोजी तखत बिछाय, कागद आया जी बाबोजी हाडै राव रा
कागद बाबोजी म्हानैं बांच सुणाय, के'र लिख्यो छै जी बाबोजी कोरै कागदां
एवड़–छेवड़ लिखिया सात सलाम, बीच लिख्या छै अे सजनांदे बेग पधारणा
म्हारै सजनां जायो न लाडण पूत, कुण चढैगो अे सजनांदे राजाजी री चाकरी
थे म्हारा बाबोजी बेदल मतना होय, म्हे तो चढांगा जी राजाजी री चाकरी
ल्याओ बाबोजी पांचूं हथियार, पांचूं तो देदयो जी बाबोजी म्हारा कापड़ा
करिया सजनां मरदाना जी भेस, करहलिया ललकार्‌या अे बाई सजनां ढळती रात रा
चढ गई सजनां घोड़ै असवार, दिन तो ऊगायो अे बाई सजनां बादसा रै देस में। [8]

राजस्थान में भाई–बहिन के प्रेमिल और पवित्र रिश्ते के रूप में हर्ष और जीण की ऐतिहासिक कथा मिलती है। इसमें बहिन जीण अपनी भाभी के ताने सुनकर घर से निकल जाती है। पीछे से भाई अपनी प्यारी बहिन को मनाने के लिए जाता है, लेकिन जीण प्राणोत्सर्ग की प्रतिज्ञा कर लेती है, तब हर्ष भी अपनी बहिन के साथ ही अपने प्राण त्याग देता है। राजस्थान के शेखावाटी अंचल में पहाड़ी हर्षनाथ भैरव (भाई हर्ष) और जीण माता (बहिन जीण) का मंदिर प्रसिद्ध है। इस कथा विषयक यह लोकगीत भी राजस्थानी स्त्रियाँ रात्रिजागरण में गाती हैं–

जीण म्हारी बाई अे, मुड़, मुड़ तूं पाछी घर–नै हाल
जामण–री अे जायी, ऊभो तो हरसो करै अे मनावणा
हरसा वीर म्हारा रे, म्हारै लार्‌यां तूं मत ना आव

म्हारै आगै मत दे अडवार।
म्हारी मा–रा रे जाया, थारी मनायी जीण ना मनै
हरसा वीर म्हारा रे, मनै मनासी रे बामण–वाणिया
जामण–रा रे जाया, बेटी मनासी रे हाडै राव–री
हरसा वीर म्हारा रे, मनै तो मनासी रे राजा मान
जामण–रा रे जाया, और मनासी दिली रो पातस्या। [9]

शोध आलेख के अन्त में राजस्थानी के दो ऐसे लोकगीत की पंक्तियाँ उद्धृत हैं, जिनमें राजस्थानी नारी के अनिवर्चनी सौन्दर्य और रूप लावण्य का वर्णन किया गया है। इसमें शृंगार रस का नख–शिख वर्णन मिलता है। ये लोकगीत 'मूमल' और 'मरवण' के नाम से प्रसिद्ध हैं। राजस्थान के मूमल–महेन्द्र का प्रेमाख्यान अत्यंत प्रसिद्ध है। महेन्द्र उसके रूप पर मुग्ध होते हुए उसे अपने मरुधर देस में ले जाने की मनुहार करता है। लोकगीत की प्रारम्भिक पंक्तियां इस प्रकार हैं–

काळी रे काळी काजळियै री रेखड़ी रे
हांजी रे, काळोड़ी कांठळ में चिमकै बीजळी
म्हारी बरसाळै री मूमल, हालै नीं अे आलीजै रै देस
न्हायो मूमल माथलियो रे मेट सूं
हांजी रे, कड़ियां तो राळ्या मूमल केसड़ा
म्हारी जगमीठी मूमल, हालै नीं अे आलीजै रै देस
सीसड़लो मूमल रो सरूप नारेळ ज्यूं
हांजी रे, केसड़ला माड़ेची रा बासग नाग ज्यूं
म्हारी जुग हाली रे मूमल, हालै नीं अे अमराणै रै देस। [10]

इसी प्रकार दूसरा लोकगीत 'मरवण' है जो ढोले की प्रेयसी है। राजस्थान के साथ गुजरात में भी ढोला–मारू का प्रेमाख्यान प्रसिद्ध है और लोकगाथा व लोकगीत के रूप में इसे गाया जाता है। ढोला–मारू के दोहे तो प्रसिद्ध हैं ही, मरवण से संबंधित यह लोकगीत भी राजस्थानी स्त्रियाँ गाती हैं। इस विरह गीत में मरवण अपने प्रियतम ढोले से घर आने की अर्ज करती है–

नरवल देश सुहावणो रे लाल, बसै ए महाजन लोग
जींतर बसैगो गोरी को सायबोजी ढोला, पान मिठाई को भोग
सनेही ढोला मारूजी घर आव।
बीजळियां रे झबूकिया रे लाल, आभै आभै एक
कह रे मिलोगा गोरीका सायबाजी ढोला, नैण काजळियां री रेख
सनेही ढोला मारूजी घर आव।
ढाढी के हाथ संदेसड़ो रे लाल, कहियो ढोलाजी नै जाय
जोबन तो हसती चढ्योजी ढोला, आंकुस देवण आय
सनेही ढोला मारूजी घर आव। [11]

इस प्रकार हम देखते हैं कि राजस्थानी के ऐतिहासिक लोकगीतों में राजस्थान की आन–बान और स्वाभिमान के गुणों से सुसम्पन्न स्त्री पात्रों का बखान बहुतायत में मिलता है। राजस्थानी ही नहीं, प्रत्येक भारतीय नारी के रूप–लावण्य, शील–सौंदर्य और उसके स्वाभिमान से ओत–प्रोत राजस्थान के ये ऐतिहासिक लोकगीत नारी सशक्तीकरण के इस दौर में अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणास्पद हैं। राजस्थानी के ऐसे स्त्रीपात्रों विषयक अप्रकाशित लोकगीतों को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ :

1. डॉ. मदनलाल शर्मा, राजस्थानी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. मदनलाल शर्मा, पृष्ठ 28
2. राजस्थानी लोकगीत, डॉ. बाबूलाल शर्मा, पृ. 5
3. राजस्थानी लोक साहित्य, सा. म. नानूराम संस्कर्ता, पृ. 43
4. संपादकीय, डॉ. किरणचन्द नाहटा, राजस्थानी गंगा (त्रैमासिक), पृष्ठ 3
5. राजस्थानी लोकगीत विहार, नरोत्तमदास स्वामी, पृष्ठ 76
6. मारवाड़ी गीत संग्रह, बाबू भगवतीप्रसादजी दारूका, पृ. 56
7. राजस्थान रा लोकगीत; भाग–एक, संग्रह–शिवजी, संपादक–रावत सारस्वत
8. वही
9. राजस्थानी लोकगीत विहार, सं.नरोत्तमदास स्वामी, पृष्ठ 114
10. रजवाड़ी लोकगीत, रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, पृष्ठ 24
11. मारवाड़ी गीत संग्रह, बाबू भगवतीलाल दारूका, पृष्ठ 177